दैनिक भास्कर | भोपाल | भोपाल, गुरुवार 20 अक्टूबर, 2016 | 6

धम्म सम्मेलन | मैपकॉस्ट में श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के प्रमुख ने कहा-

राजधर्म का पालन ही गुड गवर्नेंस

सांची बौद्ध विवि के सम्मेलन के पहले दिन का निष्कर्ष

एजुकेशन रिपोर्टर | भोपाल

धर्म को राजनीति व राज्य व्यवस्था से अलग रखने का नतीजा भ्रष्टाचार के रूप में सामने आया है। राजनीति से ताकत मिलती है, लेकिन राजनीतिक दल इस ताकत का उपयोग अपनी विचारधारा को लागू करने में कर रहे हैं। कोई धर्म मानवता के विरुद्ध जाकर दूसरों को मारने के लिए नहीं कहता है। अगर ऐसा हो रहा है तो इसका बड़ा कारण राजनीति से धर्म को अलग रखना है। यह विचार चौथे धर्म-धम्म सम्मेलन में निकलकर सामने आए। सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि के बुधवार से मैपकॉस्ट में शुरू हुए सम्मेलन में सभी वक्ताओं ने धर्म और राज व्यवस्था को एक-दूसरे का पूरक बताया।

श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के प्रमुख बेनेगेला उपाथिस्सा नायका थेरो ने कहा कि मैंने बुद्ध का दर्शन भारत में सीखा है। यहां के लोगों को गुड गवर्नेंस सीखने के लिए अन्य देशों में जाने की जरूरत नहीं है। राजधर्म का पालन ही गुड गवर्नेंस हैं। राज्य जब धर्म को स्वीकार करेंगे तभी वे बेहतर व्यवस्था दे सकेंगे। नेता और नौकरशाहों के धर्म का पालन करने पर ही गुड गवर्नेंस होगा। इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसाफिकल रिसर्च के अध्यक्ष एसआर भट्ट ने कहा कि राज्यों के द्वारा जो आतंकवाद पैदा किया जा रहा है, वो बिगड़ते माहौल के लिए जिम्मेदार है। बेहतर व्यवस्था के लिए राजनीति व ज्यूडिशियरी एक संस्था की तरह काम करती है, लेकिन इन्हें नियंत्रित व्यक्ति विशेष ही करता है। जब इन क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्ति अपने व्यक्तिगत हित देखने लगते हैं तो भ्रष्टाचार बढ़ने लगता है। बहाई कम्युनिटी ऑफ इंडिया व लोटस टेम्पल के नेशनल ट्रस्टी डॉ. एके मर्चेंट ने कहा कि पश्चिमी देश संसार को बाजार मानते हैं लेकिन भारत इसे परिवार कहता है। बहुत से देशों में धर्म को गलत परिभाषित किया है।

चौथे धर्म-धम्म सम्मेलन को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने संबोधित किया।

सम्राट अशोक ने शुरू किया था सूचना का अधिकार

गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी ग्रेटर नोएडा के रिसर्च स्कॉलर चंदन कुमार ने कहा कि नागरिकों को सबसे पहले सूचना का अधिकार देने वाला स्वीडन पहला देश था। लेकिन ऐतिहासिक तथ्यों के मुताबिक मौर्य सम्राट अशोक ने धम्म नीति के तहत पहली बार नागरिकों को सूचना का अधिकार दिया था। अशोक पहले राजा थे, जिन्होंने जानकारी नागरिकों को देनी शुरू की थी।

धर्म के नाम पर सबसे ज्यादा खून बहाया गया है : मुख्यमंत्री

मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि विश्व में धर्म के नाम पर सबसे ज्यादा खून बहाया गया है पर वह धर्म नहीं बल्कि उपासना पद्धति है। उन्होंने सम्मेलन के निष्कर्ष को प्रदेश में लागू करने की बात कही। कार्यक्रम में संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा व बौद्ध विवि के कुलपति प्रो.वायएस शास्त्री, रजिस्ट्रार राजेश गुप्ता सहित अन्य विद्वान मौजूद थे।

HINDUSTAN TIMES, BHOPAL
THURSDAY, OCTOBER 20, 2016 | 03

HOLY CONVERGENCE

■ Sri Lanka's Mahabodhi Society president Banagala Upatissa Thero, chief minister Shivraj Singh Chouhan and culture minister Surendra Patwa inaugurate the fourth International Dharma-Dhamma Conference on Religion and Polity in Bhopal on Wednesday. PTI PHOTO

धर्म धम्म सम्मेलनः मुख्यमंत्री बोले...

जो दूसरों को आनंद दे, शांति लाए, कल्याण करे, वही धर्म

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. विश्व में धर्म के नाम पर सबसे ज्यादा खून बहाया गया है, पर जिसके नाम पर खून बहाया गया है, वह धर्म नहीं, बल्कि उपासना पद्धति है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह धर्म हैं। मोह, प्रेम, शांति और आत्मीयता धर्म है, जो दूसरों को आनंद दे, वही धर्म है। यह बात बुधवार को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि द्वारा आयोजित तीन दिवसीय धर्म धम्म सम्मेलन के शुभारंभ अवसर पर कही।

मुख्यमंत्री ने कहा है कि जिसमें सबका सुख और सबका कल्याण हो, वही लोकनीति है। लोकनीति ऐसी होनी चाहिए जो इन लक्ष्यों की पूर्ति कर सके। उन्होंने कहा, दूसरों की भलाई से बड़ा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को तकलीफ पहुंचाने से बड़ा अधर्म नहीं है। इस तीन दिवसीय सम्मेलन की थीम धर्म और राज व्यवस्था है। इसमें देश-विदेश के लगभग 200 विद्वान भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि धर्म-धम्म सम्मेलन में आए अलग-अलग क्षेत्र के विद्वानों के विचार.विमर्श के बाद मिले निष्कर्ष को प्रदेश में लागू करने के प्रयास किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने विवि की काफी टेबल बुक का विमोचन भी किया। सम्मेलन में अमेरिका, थाइलैंड, म्यांमार, कंबोडिया, कोरिया, चीन, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, श्रीलंका से चिंतक आए हैं।

सम्मेलन में पुस्तक का विमोचन करते अतिथिगण।

धर्म में राजनीति-व्यापार के प्रवेश से पतन तय

पहला सत्र सुबह 11.30 से 01.30 बजे तक चला। इसमें शामिल होने आए होलिस्टिक साइंस रिसर्च सेंटर के डॉ. शैलेश मेहता ने पत्रिका से बातचीत में कहा कि नेताओं को ऐसे बोल नहीं बोलने चाहिए, जिससे विध्वंस हो। उन्होंने कहा कि राजनीति और व्यापार में धर्म को शामिल किया जाना चाहिए, लेकिन धर्म में राजनीति और व्यापार नहीं होना चाहिए, जिस धर्म में राजनीति और व्यापार प्रवेश कर जाता है उसका पतन तय है।

जो दूसरे को देना सिखाए वही धर्म

कोरिया के ग्रेजुएट स्कूल ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन के डीन प्रो. जिओ सिआंग ली ने कहा कि जो दूसरे को देना सिखाए वही धर्म है। रिलीजन और धर्म में यही अंतर है। ली ने थ्योरी भी डेवलप की है, जिसे इम्प्टीनेस नाम दिया है। उनका मानना है कि पूरी दुनिया एक खाली स्थान है, जिसमें सबकुछ भरा है।

धर्म से ही निकला धम्म का सिद्धांत

महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनगला उपतिस्स नायक थेरो ने कहा कि बुद्ध ने धर्म से चलकर ही धम्म का सिद्धांत दिया था और श्रीलंका से वापिस आकर धम्म धर्म के साथ मिलकर धर्म धम्म बन गया है। गुरुवार को 6 मुख्य एवं 14 तकनीकी सत्र होंगे, जिनमें 150 शोधपत्र पढ़े जाएंगे।